



Neutral Citation No. - 2026:AHC:17075

उच्च न्यायालय न्यायनिर्णयन इलाहाबाद

आदेश से प्रथम अपील संख्या - **1642/2011**

दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

.....अपीलार्थी(गण)

बनाम

श्रीमती लक्ष्मी देवी दुबे एवं अन्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलार्थी(गण) के अधिवक्ता

:राहुल सहाय

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता

:राकेश कुमार पोरवाल

ए.एफ.आर.

न्यायालय संख्या - 38

माननीय न्यायमूर्ति संदीप जैन,

सिविल विविध आवेदन संख्या निल, वर्ष 2025 पर आदेश

1. वादी-बीमा कंपनी के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि प्रतिवादी संख्या 3 - गौरव दुबे का निधन 25-4-2024 को हो गया है, और उनके कानूनी वारिस पहले से ही रिकॉर्ड में हैं, इसलिए अपील ज़ापन में पक्षकारों की सूची में उनके नाम के बाद इस आशय का एक पृष्ठांकन दर्ज किया जाए।

2. दावेदारों-प्रतिवादियों के विद्वान अधिवक्ता ने उपरोक्त आवेदन का विरोध नहीं किया है।

3. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, आवेदन स्वीकार किया जाता है।

4. वादी-बीमा कंपनी के विद्वान अधिवक्ता को निर्देश दिया जाता है कि वे आज अपील ज़ापन में आवश्यक अनुमोदन शामिल करें।

अपील पर आदेश:

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



1. मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 173 के तहत यह अपील दुर्घटना में शामिल वाहन संख्या यूपी-78-क्यू-9280 के बीमाकर्ता द्वारा मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण/जिला न्यायाधीश, इटावा द्वारा दिनांक 25.01.2011 को पारित निर्णय और पुरस्कार के विरुद्ध दायर की गई है। यह निर्णय मोटर दुर्घटना दावा याचिका संख्या 403/2008 (श्रीमती लक्ष्मी देवी दुबे और तीन अन्य बनाम श्रीमती अनवरी बेगम और अन्य) में पारित किया गया था, जिसके तहत 21.01.2008 को हुई सड़क दुर्घटना में लगी चोटों के कारण रमाकांत दुबे की असामयिक मृत्यु के लिए दावेदारों को 13,57,000/- रुपये का मुआवजा 6% प्रति वर्ष की दर से ब्याज सहित प्रदान किया गया था, जिसे उक्त दुर्घटना में शामिल वाहन के बीमाकर्ता द्वारा प्रतिपूर्ति करने का आदेश दिया गया था।

2. वादी-बीमा कंपनी के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि कथित दुर्घटना में दोषी चालक की कोई लापरवाही नहीं थी, लेकिन न्यायाधिकरण ने इसके विपरीत निर्णय दिया है। विद्वान अधिवक्ता ने बताया कि दुर्घटना के समय, एक बैल अचानक सड़क पार कर रहा था, और उससे टक्कर से बचने के लिए चालक ने अपनी कार को मोड़ा और मृतक को टक्कर मार दी, जिसमें दोषी कार चालक की कोई लापरवाही नहीं थी। उन्होंने आगे कहा कि मृतक को दुर्घटना में कोई घातक चोट नहीं आई थी। वास्तव में, उपचार के बाद, उन्हें 3-2-2008 को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी, लेकिन टिटनेस के कारण उन्हें 4-2-2008 को फिर से अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां 12-2-2008 को उपचार के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने आगे कहा कि मृतक को लगी चोटों और उनकी मृत्यु के कारण, जो कि टिटनेस था, के बीच कोई संबंध नहीं था, इसलिए न्यायाधिकरण ने यह निष्कर्ष निकालने में गलती की है कि मृतक की मृत्यु दुर्घटना में लगी चोटों के कारण हुई। इन दलीलों के साथ यह प्रार्थना की गई कि अपील को स्वीकार किया जाए और न्यायाधिकरण के विवादित निर्णय और पुरस्कार को रद्द किया जाए।

3. इसके विपरीत, दावेदारों-प्रतिवादियों के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि मृतक को दुर्घटना में गंभीर चोटें आईं, जिसके कारण उन्हें टिटनेस हो गया और बाद में उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार, मृतक को लगी चोटों और उनकी मृत्यु के कारण के बीच घनिष्ठ संबंध था, जो रिकॉर्ड पर मौजूद दस्तावेजी साक्ष्यों से सिद्ध हो चुका है। अतः, ट्रिब्यूनल ने वादी को दावेदारों को देय मुआवजे की भरपाई करने का आदेश देने में कोई त्रुटि नहीं की है। यह भी प्रस्तुत किया गया कि ट्रिब्यूनल ने वास्तव में दावेदारों को कम मुआवजा दिया है, जिसे कानून के अनुसार बढ़ाया जाना चाहिए।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



4. मैंने दोनों पक्षों के विद्वान अधिवक्ताओं की बात सुनी है और निचली अदालत के रिकॉर्ड का अध्ययन किया है।

5. निचली अदालत के रिकॉर्ड की जांच से स्पष्ट है कि दुर्घटना में शामिल कार की मालिक श्रीमती अनवरी बेगम ने अपने लिखित बयान में दुर्घटना की बात स्वीकार की है और कहा है कि यह दैवीय हस्तक्षेप के कारण हुई, क्योंकि अचानक एक आवारा जानवर सड़क पर आ गया था। उन्होंने आगे कहा कि दुर्घटना मृतक की लापरवाही के कारण हुई, जो लापरवाही से मोटरसाइकिल चला रहा था। उन्होंने यह भी कहा कि दुर्घटना के समय कार चालक राघवेंद्र पाल सिंह के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस था और कार का बीमा न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड से था, इसलिए यदि उन पर कोई दायित्व बनता है, तो उसकी भरपाई दुर्घटना में शामिल कार के बीमाकर्ता द्वारा की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि मृतक की मृत्यु डॉक्टरों की लापरवाही के कारण हुई, जिसके लिए मालिक, चालक और बीमाकर्ता जिम्मेदार नहीं हैं।

6. न्यायाधिकरण के समक्ष, मृतक की पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी ने स्वयं को प्रथम गवाह, जगदीश प्रसाद को द्वितीय गवाह और रमाकांत को तृतीय गवाह के रूप में गवाही दी, जबकि दुर्घटना में शामिल वाहन के मालिक, चालक और बीमाकर्ता द्वारा कोई मौखिक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया। तृतीय गवाह दुर्घटना का प्रत्यक्षदर्शी नहीं है।

7. अभियोजन पक्ष के गवाह-1 ने पूरी ईमानदारी से स्वीकार किया कि वह दुर्घटना की प्रत्यक्षदर्शी नहीं थी। अभियोजन पक्ष के गवाह-2 जगदीश प्रसाद ने बयान दिया कि 21-1-2008 को शाम लगभग 6.00 बजे, वह जसवंत नगर से अपने गांव बर्सा साइकिल से आ रहे थे, और जब वह कांतिहार स्थित पेट्रोल पंप के पास पहुंचे, तो उन्होंने सैफई से इटावा की ओर जाती हुई एक मोटरसाइकिल (यूपी-75-एफ-5736) देखी। उसी समय, एक कार (यूपी-78-क्यू-9280), जो तेज और लापरवाही से चलाई जा रही थी, दाहिनी ओर से गुजर रहे एक बैल से बचने के लिए बाईं ओर मुड़ी और पीछे से मोटरसाइकिल से टकरा गई, जिससे मोटरसाइकिल चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। उन्होंने आगे बयान दिया कि घटनास्थल पर वैदपुरा पुलिस स्टेशन के पुलिसकर्मी भी मौजूद थे, जो घायल रमाकांत को इटावा जिला अस्पताल ले गए, और उनकी मोटरसाइकिल को पुलिस स्टेशन ले जाया गया। उन्होंने आगे बयान दिया कि दुर्घटना कार चालक की घोर लापरवाही के कारण हुई, क्योंकि यदि वह सामान्य

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



गति से गाड़ी चला रहा होता तो दुर्घटना नहीं होती। जिरह के दौरान उन्होंने बयान दिया कि दुर्घटना मृतक की मोटरसाइकिल और कार के उनकी मोटरसाइकिल को पार करने के बाद हुई। उन्होंने आगे बयान दिया कि सड़क पर बैल के आने से पहले ही मृतक की मोटरसाइकिल सड़क पार कर चुकी थी और कार ने मोटरसाइकिल को पीछे से टक्कर मार दी।

8. प्रत्यक्षदर्शी (अभियोजन पक्ष का गवाह-2) के बयान से यह स्पष्ट है कि दुर्घटना तब हुई जब दोषी कार ने मृतक की मोटरसाइकिल को पीछे से टक्कर मारी, अतः दुर्घटना में मृतक की कोई लापरवाही नहीं थी। यह भी स्पष्ट है कि यदि दोषी चालक नियंत्रित गति से गाड़ी चला रहा होता, तो दुर्घटना को टाला जा सकता था। दुर्घटना के समय दोषी कार चालक की लापरवाही साबित करने के लिए उससे पूछताछ नहीं की गई है।

9. इस तथ्य को देखते हुए, वादी के विद्वान अधिवक्ता का यह तर्क कि दुर्घटना में दोषी कार चालक की कोई लापरवाही नहीं थी, खारिज कर दिया जाता है।

10. मृतक के रिकॉर्ड में मौजूद उपचार संबंधी दस्तावेजों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि मृतक को 23-1-2008 से 3-2-2008 तक आगरा के जय देवी अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र में भर्ती कराया गया था, जहां उनका दाहिने घुटने की हड्डी के फ्रैक्चर का इलाज किया गया और ऑपरेशन किया गया। मृतक की जांच डॉ. ए.एन. तिवारी ने 04-2-2008, 06-2-2008, 08-2-2008 और 10-2-2008 को की थी, जिन्होंने लगातार तेज बुखार का निदान किया और अपने विवेक के अनुसार उचित उपचार निर्धारित किया। 12-2-2008 को, पूरे शरीर में कंपन और झटके आने के कारण, जो धनुष की तरह झुक रहा था, उन्होंने निदान किया कि मृतक बुखार के साथ टिटनेस से पीड़ित थे, और उन्हें कानपुर के जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के आईडीएच विभाग में रेफर किया, लेकिन 12-2-2008 को घर पर ही उनका निधन हो गया। यह स्पष्ट है कि मृतक का इलाज 4-2-2008 से लेकर 12-2-2008 को उनकी मृत्यु तक जारी रहा और अंततः उनकी मृत्यु टिटनेस के कारण हुई।

11. इस न्यायालय को यह जांच करनी होगी कि मृतक की मृत्यु के कारण और दुर्घटना में उसे लगी चोटों के बीच कोई संबंध था या नहीं।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



12. कर्नाटक उच्च न्यायालय ने जयराथनामा और अन्य बनाम मुख्तियार सिंह और अन्य 2005 एससीसी ऑनलाइन कर 639 के मामले में, जहां मृतक की मृत्यु एक दुर्घटना में लगी चोटों के परिणामस्वरूप टिटनेस से हुई थी, निम्नलिखित निर्णय दिया:

6. अभियोजन पक्ष के गवाह 2 के साक्ष्य से पता चलता है कि मृतक को दुर्घटना के दिन, यानी 3.11.1992 को चित्रदुर्ग के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था और वह तीन दिनों तक वहां भर्ती रहा। इसके बाद, उसे चित्रदुर्ग के सरकारी अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और बेल्लारी के सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती कराया गया। निःसंदेह, डिस्चार्ज सर्टिफिकेट से पता चलता है कि मृतक को चिकित्सकीय सलाह के विरुद्ध डिस्चार्ज किया गया था। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि चित्रदुर्ग के सरकारी अस्पताल से मृतक को डिस्चार्ज करने वाले व्यक्तियों की ओर से कोई लापरवाही थी। मृतक बेल्लारी जिले के संदूर तालुक के श्रीरामासेठीहल्ली गांव का निवासी था। चिकित्सकीय सलाह के विरुद्ध डिस्चार्ज से यह संकेत मिलता है कि मृतक को लगी चोटें गंभीर प्रकृति की थीं। इन परिस्थितियों में, यह निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है कि मृतक के उपचार में लापरवाही हुई और मृतक की मृत्यु इसी लापरवाही के कारण हुई। इसलिए, मृतक को चित्रदुर्ग के छोटे अस्पताल से बेल्लारी के मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में स्थानांतरित किए जाने से यह स्पष्ट होता है कि मृतक को सर्वोत्तम उपचार प्रदान करने के लिए सभी प्रयास किए गए थे। संभवतः मृतक श्रीरामासेठीहल्ली गांव, संदूर तालुक, बेल्लारी जिले का निवासी था, जो बेल्लारी के मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के निकट है, इसलिए उसे बेल्लारी के मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में स्थानांतरित किया गया था। इसके अलावा, इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि बेल्लारी के मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में चित्रदुर्ग के सरकारी अस्पताल की तुलना में बेहतर उपचार सुविधाएं थीं। प्रदर्श पृष्ठ 24 से पता चलता है कि मृतक की मृत्यु टिटनेस के कारण हुई थी। वेबस्टर शब्दकोश में 'टिटनेस' शब्द का वर्णन इस प्रकार है:

"टेटनस एक संक्रामक, अक्सर घातक बीमारी है, जो क्लोस्ट्रीडियम टेटानी नामक एक विशिष्ट जीवाणु के कारण होती है, जो घावों के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर जाता है, और इसमें कई या सभी ऐच्छिक मांसपेशियों में कमोबेश हिंसक टॉनिक ऐंठन और कठोरता होती है।"

इस मामले में, इस बात पर कोई विवाद नहीं हो सकता कि मृतक को दुर्घटना में लगी चोटों के परिणामस्वरूप टिटनेस हो गया था। बीमा कंपनी का यह दावा नहीं है कि मृतक को बेल्लारी के सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती नहीं कराया गया था और न ही उसकी मृत्यु अस्पताल में हुई थी। याचिका में किए गए कथनों का समर्थन मृतक की विधवा, अभियोजन पक्ष के गवाह संख्या 2 के साक्ष्य

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



से होता है। दुर्घटना की तिथि और मृत्यु की तिथि में निकटता है। इस बात पर विवाद नहीं किया जा सकता कि यदि मृतक को दुर्घटना में चोटें न लगी होतीं, तो उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराने की कोई आवश्यकता नहीं थी। प्रतिवादी की ओर से ऐसा कोई सबूत पेश नहीं किया गया है जिससे यह साबित हो सके कि दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की मृत्यु शनमुखप्पा या उसके कानूनी वारिसों की लापरवाही के कारण हुई है, जो उसकी देखभाल कर रहे थे। जब रिकॉर्ड में मौजूद साक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि मृतक को चित्रदुर्ग के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था और उसके बाद उक्त अस्पताल से उसे बेल्लारी के सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में स्थानांतरित किया गया, जहाँ उसकी मृत्यु हुई, तो अन्य किसी साक्ष्य के अभाव में केवल यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मृतक की मृत्यु दुर्घटना में लगी चोटों के परिणामस्वरूप हुई थी। यह बताना आवश्यक है कि जब दुर्घटना का शिकार व्यक्ति अस्पताल में भर्ती होता है, तो न तो उसका और न ही उसके निकट संबंधियों, जिनमें उसके कानूनी वारिस भी शामिल हैं, का अस्पताल में पीड़ित को दिए गए उपचार की प्रकृति पर प्रत्यक्ष नियंत्रण या आकलन करने की क्षमता होती है। ऐसी स्थिति में, यदि दुर्घटना के शिकार व्यक्ति का इलाज करने वाले डॉक्टरों की ओर से कोई चूक भी हुई हो, तो यह दुर्घटना के शिकार व्यक्ति और उसकी मृत्यु की स्थिति में, उसके कानूनी वारिसों को उस मुआवजे से वंचित करने का आधार नहीं हो सकता जिसके वे कानून के अनुसार हकदार हैं। इस पूरे मामले को इस बात को ध्यान में रखते हुए देखना होगा कि अधिनियम के प्रावधान दुर्घटना के शिकार व्यक्ति या पीड़ित की मृत्यु की स्थिति में उसके कानूनी वारिसों को होने वाली कठिनाई को दूर करने के लिए मुआवजे के प्रावधान हेतु बनाए गए हैं, और इस कानून का उद्देश्य दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की रक्षा करना है। मृतक शनमुखप्पा को लगी चोटों के अलावा, सामान्य तौर पर, उन्हें टिटनेस होने की कोई संभावना नहीं थी, जिसे उनकी मृत्यु का कारण बताया जा रहा है। यदि इस प्रकार देखा जाए, तो हमें रिकॉर्ड पर मौजूद साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालने में कोई संकोच नहीं है कि शनमुखप्पा की मृत्यु दुर्घटना में लगी चोटों के परिणामस्वरूप हुई थी। इन परिस्थितियों में, हमारे पास अभियोजन पक्ष के गवाह 2 के इस साक्ष्य पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि मृतक को बेल्लारी के सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती कराया गया था और उनकी मृत्यु अस्पताल में हुई थी। इसलिए, हमारा मानना है कि विद्वान न्यायाधिकरण का यह मानना उचित नहीं था कि मृतक की मृत्यु उसकी चोटों के परिणामस्वरूप नहीं हुई थी।

(जोर दिया गया)

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



13. मद्रास उच्च न्यायालय ने न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम मल्लिका और अन्य के मामले में, सीएमए संख्या **2835/2002** में दिनांक 01.02.2008 को दिए गए निर्णय में, मृतक की मृत्यु के कारण और दुर्घटना में उसे लगी चोटों के बीच संबंध की जांच करते हुए, निम्नलिखित निर्णय दिया:-

7. मृतक मिथुमाथी को 19.11.1998 को लॉरी चलाते समय एक दुर्घटना में चोटें आईं। प्रथम दावेदार [वादी गवाह-1] ने अपने साक्ष्य में बताया है कि मृतक मिथुमाथी को 19.11.1998 को कृष्णागिरी के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था और प्रारंभिक उपचार के बाद, उन्हें आगे के उपचार के लिए 22.11.1998 को चेन्नई के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। मृतक को 14.05.1999 को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और 23.09.1999 को उनके निवास पर उनका निधन हो गया। अभियोजन पक्ष के गवाह-1 ने अपने साक्ष्य में कहा है कि अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद भी मृतक ने निजी उपचार कराया था। अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान उनका दो बार ऑपरेशन हुआ और उसके बाद ही उन्हें 14.05.1999 को छुट्टी दी गई।

8. अपने साक्ष्य में, वादी के गवाह-2 डॉ. गोपालन, जो स्टेनली मेडिकल कॉलेज अस्पताल में सर्जन हैं, ने कहा है कि उन्होंने मृतक की मृत्यु से एक दिन पहले, 22.07.1999 को उसकी जांच की थी और जांच के दौरान उन्होंने पाया कि मृतक का जबड़ा अकड़ा हुआ था और उसके शरीर की मांसपेशियां भी अकड़ी हुई थीं। अभियोजन पक्ष के गवाह-2 ने आगे बयान दिया कि मृतक को "लेटेंट टिटनेस" हो गया था और संभवतः इसी कारण से मृतक की मृत्यु हुई। प्रदर्श ए-2 डिस्चार्ज समरी है जिससे पता चलता है कि बायां पैर आंशिक रूप से काटा गया था और मृतक को दो सप्ताह बाद एसएसजी के लिए आने की सलाह दी गई थी।

9. यह स्वीकार किया जाता है कि मृतक मिथुमाथी को 19.11.1998 को इयूटी के दौरान बाएं पैर के पार्श्व भाग में चोट लगी थी। उनका सेप्टीसीमिया का इलाज भी किया गया था। जिरह के दौरान वादी के गवाह-2 ने स्वीकार किया कि मृतक के इलाज के दौरान, उन्हें भविष्य में टिटनेस से बचाव के लिए एंटी-टिटनेस टॉक्सिसाइड का इंजेक्शन दिया गया था। अभियोजन पक्ष के गवाह-2 के साक्ष्य के आधार पर, वादी के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया कि मृतक मिथुमाथी को एंटी-टिटनेस का इंजेक्शन दिया गया था, इसलिए यह असंभव है कि मृतक को टिटनेस हुआ हो। इस आधार पर, यह तर्क दिया गया

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



कि इस बात पर संदेह होना चाहिए कि क्या मिथुमाथी की मृत्यु दुर्घटना में लगी चोट के परिणामस्वरूप हुए टिटनेस के कारण हुई थी।

10. वादी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा उठाया गया यह संदेह स्वीकार्य नहीं है। अपने साक्ष्य में वादी गवाह-2 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि 22.07.1999 को मृतक की जांच करते समय उन्होंने पाया कि मृतक को गुप्त टेटनस हो गया था। यह संभव है कि लगाए गए एंटी-टेटनस इंजेक्शन का असर एक वर्ष से अधिक समय तक रहा हो। चूंकि मृतक के पूरे बाएं पैर पर कुचलने की चोट लगी थी, इसलिए टेटनस के हमले से इनकार नहीं किया जा सकता। वादी का यह तर्क कि चोटों और मृतक की मृत्यु के बीच कोई संबंध नहीं था, निराधार है। अभियोजन पक्ष के गवाह-2 के साक्ष्य के आलोक में यह निष्कर्ष निकालने में कोई कठिनाई नहीं है कि टेटनस संक्रमण के कारण हुई मृत्यु का सीधा संबंध मिथुमाथी को दुर्घटना में लगी चोट से है। मृत्यु का कारण मृतक को उसके रोजगार के दौरान लगी चोट से दूरस्थ या असंबद्ध नहीं है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यदि मृत्यु का कारण दुर्घटना में लगी चोट से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, तो मृत्यु का कारण दुर्घटना में लगी चोट को ही माना जाना चाहिए।

11. यह तर्क देना व्यर्थ है कि मृतक की मृत्यु टिटनेस के कारण हुई थी या नहीं। 1975 एसीजे 215 [मद्रास] गोविंद सिंह और अन्य बनाम कैलाशम और अन्य के मामले में, मृतक को अपने रोजगार के दौरान चोट लगी थी। मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत आने वाले उस मामले में, उपचार के दौरान घायल व्यक्ति को टिटनेस हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। यह देखते हुए कि मृत्यु का कारण निर्धारित करने के लिए शव परीक्षण अनिवार्य नहीं है और यह मानते हुए कि मृत्यु का कारण मृतक को लगी चोट से दूरस्थ या असंबद्ध नहीं है, न्यायालय ने कहा है:

"11. ... इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि किसी भी रक्तस्राव की चोट के परिणामस्वरूप टिटनेस का होना एक पूर्वानुमानित और संभावित परिणाम है और इस बात का कोई सबूत नहीं है कि किसी अन्य अप्रत्याशित कारण से टिटनेस का संक्रमण हुआ हो, इसलिए हीरा बाई की मृत्यु किसी अप्रत्याशित घटना के कारण होने की कोई संभावना नहीं है।"

उपरोक्त टिप्पणी वर्तमान मामले पर पूर्णतया लागू होती है।

(जोर दिया गया)

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



14. छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम सुख्यारिन और अन्य 2024 एससीसी ऑनलाइन, छः 7750 के मामले में, जहां दुर्घटना के परिणामस्वरूप कटे हुए अंग में संक्रमण के कारण मृत्यु हुई थी, निम्नलिखित निर्णय दिया:-

15. वर्तमान मामले में, मृतक को दुर्घटना में चोटें आईं क्योंकि प्रतिवादी संख्या 4 द्वारा वाहन को लापरवाही और तेज गति से चलाया गया था, जिसके परिणामस्वरूप मृतक का बायां पैर काटना पड़ा और जब वह घर में था, तो उसमें संक्रमण हो गया जिससे उसकी मृत्यु हुई। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता कि मृत्यु वाहन को लापरवाही और तेज गति से चलाने के कारण नहीं हुई थी और यदि दुर्घटना न हुई होती, तो उसका बायां पैर नहीं काटना पड़ता और शरीर में संक्रमण की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, मृत्यु के कारण और दुर्घटना के बीच संबंध है। दावेदार गवाह (अभियोजन पक्ष के गवाह/1) सुखियारिन बैन ने अपने बयान में स्पष्ट रूप से कहा है कि मृतक के शरीर के ऑपरेशन वाले स्थान पर मृत ऊतकों, कोशिकाओं और बैक्टीरिया से युक्त गाढ़े तरल पदार्थ की दुर्गंध थी, जिसका न तो जिरह के माध्यम से खंडन किया गया और न ही बीमा कंपनी द्वारा किसी गवाह से पूछताछ की गई, इसलिए मृतक के शरीर में संक्रमण की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

16. मृत्यु के कारण और दुर्घटना के बीच संबंध का मुद्दा मद्रास के माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष गोविंद सिंह बनाम ए.एस. कैलाशराम मामले में विचार के लिए आया था, जिसका निर्णय 1-8-1974 को हुआ था, जिसमें पैरा 11 में निम्नलिखित कहा गया है।

“11. एक दुर्घटना में लगी चोट बाद में लगने वाली चोट का कारण बन सकती है। ऑपरेशन टेबल पर पीड़ितों को लगी दुर्घटना की चोट इसका एक उदाहरण है। इसी तरह, दुर्घटना के कारण उत्पन्न मानसिक स्थिति से आत्महत्या के मामले भी इसी श्रेणी में आते हैं (पिग्नी बनाम पॉइंटेरा ट्रांसपोर्ट सर्विस लिमिटेड, [1957] 2 ऑल ईआर 807)। स्मिथ बनाम लीच ब्रेन एंड कंपनी लिमिटेड, [1961] 3 ऑल ईआर 1159, एक ऐसा मामला था जिसमें वादी पिघली हुई धातु के छींटे से घायल हो गया था जिससे उसका होंठ जल गया था। बाद में उसे कैंसर हो गया, उसका ऑपरेशन हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। प्रतिवादियों को जलने का कारण बनने में लापरवाही का दोषी पाया गया और जलने की घटना ही वह कारक थी जिसने ऊतकों में कैंसर को बढ़ावा दिया, जिनमें पहले से ही पूर्व-घातक स्थिति थी। लॉर्ड पार्कर, मुख्य न्यायाधीश, ने मृत्यु का कारण मूल दुर्घटना को बताया और प्रतिवादियों को उस मृत्यु के लिए उत्तरदायी पाया। वीलैंड बनाम सिरिल लॉर्ड कार्पेट्स लिमिटेड, [1969] 3 ऑल ईआर

“अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा

सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



1006 एक ऐसा मामला था जहां वादी को प्रतिवादियों की स्वीकार्य लापरवाही के कारण चोट लगी। अस्पताल पहुंचने के बाद, वह कांप रही थी और उसकी गर्दन पर लगे कॉलर के कारण उसके सिर की गति बाधित हो गई थी। परिणामस्वरूप, वह अपने चश्मे का सामान्य रूप से उपयोग नहीं कर पा रही थी और सीढ़ियों से उतरते समय गिर गई, जिससे उसे और चोटें आईं। यह माना गया कि दूसरी बार गिरने से हुई चोटें और क्षति प्रतिवादियों की मूल लापरवाही के कारण हुई थीं, इसलिए उनसे मुआवजा मांगा जाना चाहिए। ब्लूर बनाम लिवरपूल डेरिकिंग एंड कंपनी लिमिटेड, [1936] 3 ऑल ईआर 399 एक ऐसा मामला था जहां मृतक, जो एक डेरिकर के रूप में कार्यरत था, ने स्वेच्छा से एक अन्य बजरा पर अस्थायी रूप से शिपर के रूप में काम किया, ठोकर खाकर गड्ढे में गिर गया और उसे मामूली चोटें आईं। उसे अस्पताल ले जाया गया और बेहोशी की दवा दी गई, जिसके तहत वह गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। पोस्टमार्टम जांच से पता चला कि उसका हृदय रोग से ग्रसित था। अपील न्यायालय के तीन विद्वान न्यायाधीशों ने माना कि बेहोशी की दवा देना प्रतिवादियों की लापरवाही का कारण नहीं माना जा सकता। नोवस-एक्टस इंटरवेनिएन्स इस प्रकार है कि दुर्घटना और मृत्यु के बीच कारण-कार्य की श्रृंखला टूट जाती है और परिणामस्वरूप मृत्यु को दुर्घटना में लगी चोटों के कारण ही माना जाना चाहिए। इस न्यायालय की एक पीठ को श्रीमती सी.पी. फ्रांसिस बनाम के.एस. शिवाजी एंड कंपनी, सीएमए संख्या 96/1970 (11-2-1974, मद्रास) के फैसले में विचार करना पड़ा कि क्या दुर्घटना पीड़ित, जिसके पेट के दाहिने हिस्से पर चोट लगी थी, लेकिन पेट पर कोई दिखाई देने वाली चोट नहीं थी, को दुर्घटना में लगी चोट के परिणामस्वरूप मृत माना जा सकता है, जबकि कुछ दिनों बाद, पेट दर्द के शल्य चिकित्सा उपचार के लिए उसका पेट खोलना पड़ा और तब पाया गया कि ग्रेटर ओमेंटम आंतों के लूप को ढक रहा था जो श्रोणि तक नीचे जा रहे थे, जिससे रुकावट पैदा हो रही थी, एक झिल्ली जेजुनो-इलियल जंक्शन को ढक रही थी और आगे की जांच में पेलिकैबिस और फटा हुआ अपेंडिक्स पाया गया। पीड़ित का ऑपरेशन किया गया, लेकिन उसकी पेरिटोनिटिस से मृत्यु हो गई। इस न्यायालय ने माना कि, इस बात का कोई स्वतंत्र प्रमाण न होने के कारण कि पीड़ित पहले से ही अपेंडिसाइटिस से पीड़ित था, न्यायालय का यह अनुमान लगाना उचित था कि मृतक की मृत्यु दुर्घटना के समय वाहन चालक की लापरवाही और जल्दबाजी के कारण हुए अपेंडिसाइटिस का परिणाम थी। इस प्रकार के मामलों में सिद्धांत को लॉर्ड डेनिंग, एम.आर. द्वारा स्टेटमेंट बनाम वेस्ट अफ्रीकन टर्मिनल्स लिमिटेड, (1954) 2 लॉयड्स रेप 371 (पृष्ठ 375 पर) में दिए गए शब्दों में सर्वोत्तम रूप से वर्णित किया जा सकता है:

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



“...यह आवश्यक नहीं है कि परिस्थितियों का सटीक वर्णन किया जाए। यदि परिणाम सामान्य सीमा के भीतर था, जिसकी कोई भी समझदार व्यक्ति भविष्यवाणी कर सकता था (और यह पूरी तरह से अलग प्रकार का नहीं था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था), तो यह नियम के अंतर्गत आता है कि लापरवाही का दोषी व्यक्ति परिणामों के लिए उत्तरदायी है।”

19. उपर्युक्त कानूनी स्थिति को, तथा साथ ही रिकॉर्ड पर लाए गए साक्ष्यों और डॉक्टर द्वारा दी गई राय को ध्यान में रखते हुए—कि मृतक के शरीर में संक्रमण था और उसके बाएँ पैर को काटना पड़ा था (जिस पर कोई विवाद नहीं है)—यह स्पष्ट है कि शरीर में हुआ यह संक्रमण, पैर काटे जाने की ही परिणति थी। यह स्पष्ट है कि मृत्यु प्रतिवादी संख्या 4 द्वारा ट्रैक्टर के लापरवाहीपूर्ण और तेज गति से चलाने के कारण हुई थी, अतः मृत्यु के कारण के संबंध में संबंध स्थापित होता है। साथ ही, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि बीमा कंपनी ने श्रीमती सुखियारिन बाई (अभियोजन पक्ष के गवाह-01) के बयान का खंडन करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है, जिन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि उनके पति का बायाँ पैर प्रतिवादी संख्या 4 द्वारा ट्रैक्टर के लापरवाहीपूर्ण और तेज गति से चलाने के कारण काट दिया गया था और उसके बाद उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार, यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि मृत्यु वाहन के लापरवाहीपूर्ण और तेज गति से चलाने के कारण हुई, जिससे मृतक का बायाँ पैर काट दिया गया। अतः वादी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत यह दलील कि यह स्वाभाविक मृत्यु थी और दावेदारों ने यह साबित करने के लिए किसी डॉक्टर की जांच नहीं की है कि मृत्यु अंग-विच्छेदन के कारण हुई थी, खारिज किए जाने योग्य है।

(जोर दिया गया)

15. इसी तरह के तथ्यों और परिस्थितियों में, जहां दुर्घटना के परिणामस्वरूप घायल क्षेत्र में संक्रमण के कारण सेप्टीसीमिया से मृत्यु हुई, मद्रास उच्च न्यायालय ने नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



एंथोनी @ राकेश और अन्य 2014 एससीसी ऑनलाइन मद्रास 480 के मामले में निम्नलिखित निर्णय दिया:-

9. वत्सला बनाम मीनाक्षी, 2005 (1) टीएन एमएसी 62 (डीबी) : 2005 (1) एलडब्ल्यू 560; मारिकार मोटर्स लिमिटेड बनाम नीलमबल रामास्वामी, 1982 एसीजे (सप्लीमेंट) 570, और सीएमए संख्या 1305/2012 के फैसले में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि जब तथ्यात्मक रूप से यह स्थापित हो जाता है कि मृत्यु चोट से असंबंधित नहीं थी, जब न्यायाधिकरण के समक्ष यह दिखाने के लिए पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की जाती है कि मृतक निरंतर उपचार ले रहा था और जब कोई विपरीत साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जाता है, तो दावे को स्वीकार किया जाना चाहिए।

10. ****

11. दूसरे प्रतिवादी के अधिवक्ता का अगला तर्क यह है कि एंथोनी उर्फ एंथोनी राकेश की मृत्यु उसे लगी चोटों के कारण नहीं हुई थी। दूसरे प्रतिवादी के अधिवक्ता के अनुसार, जब तक पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की जाती, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि मृत्यु का चोट से कोई संबंध था। वादी के अधिवक्ता ने निम्नलिखित निर्णयों का हवाला देते हुए तर्क दिया है कि यह साबित करने के लिए पोस्टमार्टम रिपोर्ट आवश्यक नहीं है कि मृत्यु चोट के बाद के प्रभावों के कारण हुई थी।

12. गोविंद सिंह बनाम ए.एस. कैलाशम, 1975 एसीजे 215 में प्रकाशित निर्णय में, इस न्यायालय ने निम्नलिखित निर्णय दिया है:

“9. ... ऐसे मामले में जहां रोगी को चिकित्सकीय रूप से टिटनेस या लॉक-जॉ से पीड़ित पाया गया हो और उपचार के बावजूद उसकी मृत्यु हो गई हो, मृत्यु के कारण का पता लगाने के लिए शव परीक्षण अनिवार्य परीक्षण नहीं है। ...

10. ... यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यदि मृत्यु का कारण दुर्घटना में लगी चोट से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है और यह कारण-कार्य संबंधों की श्रृंखला में से एक है, तो मृत्यु का कारण दुर्घटना में लगी चोट को ही माना जाना चाहिए, चाहे वह चोट अपने आप में कितनी भी मामूली या तुच्छ क्यों न हो।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



13. खैरुल्लाह बनाम अनीता, 1994 एसीजे 1017 में प्रकाशित निर्णय में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने निम्नलिखित निर्णय दिया है:

4. वादीओं की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता श्री पी. रामा राव ने पुरजोर तर्क दिया है कि मृतक के शव का पोस्टमार्टम नहीं किया गया ताकि मृत्यु के कारण का पता लगाया जा सके। यह ध्यान देने योग्य है कि दुर्घटना के लगभग 25 दिन बाद चिकित्सा उपचार के दौरान मृतक की मृत्यु हो गई और वह चोटों के कारण दम तोड़ दिया। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, प्रदर्श ए-10, हैदराबाद नर्सिंग होम का इन-पेशेंट डिस्चार्ज टिकट, जहां मृतक की मृत्यु के समय उसका इलाज चल रहा था, दर्शाता है कि हृदय-श्वसन विफलता के कारण मृतक की मृत्यु हुई, जो सिर की चोट का परिणाम और द्वितीयक कारण है। दुर्घटना के समय मृतक को सिर में चोट लगी थी। यह भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा 302 के अंतर्गत आने वाला मामला नहीं है, जिसमें मृत्यु के कारण का पता लगाने के लिए पोस्टमार्टम कराना आवश्यक हो। इस मामले में, मृत्यु का कारण दस्तावेजी साक्ष्यों, विशेष रूप से प्रदर्श ए-10 और अभियोजन पक्ष के गवाह 2 के साक्ष्य से ज्ञात है। अभियोजन पक्ष के गवाह 2 का बयान विश्वसनीय है। इस मामले में उपलब्ध मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्यों के आलोक में, मृतक के शव का पोस्टमार्टम न करना, मृतक की मृत्यु के लिए मुआवजे का दावा करने वाले याचिकाकर्ताओं के विरुद्ध कोई प्रतिकूल परिस्थिति नहीं मानी जा सकती।

14. उपरोक्त निर्णयों में दिए गए अनुपात वर्तमान मामले के तथ्यों पर पूर्णतया लागू होते हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, मृतक का निरंतर चिकित्सा उपचार चल रहा था। प्रदर्श पी-4 से पी-10 तक संक्रमण की उपस्थिति को भी दर्शाते हैं, जिसकी पुष्टि अभियोजन पक्ष के गवाह 3 के साक्ष्य से भी होती है। द्वितीय प्रतिवादी द्वारा कोई विरोधाभासी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। उपरोक्त मामलों में दिए गए अनुपात को लागू करते हुए, मैं यह मानता हूँ कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य नहीं है, क्योंकि मृत्यु का कारण अन्य दस्तावेजों, अर्थात् पी-4 से पी-10 से भी समझा जा सकता है।

16. विभिन्न उच्च न्यायालयों द्वारा निर्धारित उपरोक्त कानून से यह स्पष्ट है कि जहां वाहन दुर्घटना में लगी चोटों और मृतक की मृत्यु के कारण के बीच संबंध हो, वहां मोटर दुर्घटना में घायल हुए व्यक्ति की मृत्यु के लिए निश्चित रूप से मुआवजा दिया जा सकता है। यह स्पष्ट है कि इस मामले में, 21.01.2008 को दुर्घटना में लगी चोटों के कारण मृतक को लाइलाज टिटनेस हो गया और 12.02.2008 को इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। यदि मृतक को दुर्घटना में चोटें न लगी होतीं, जिसके लिए

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



उसका ऑपरेशन किया गया था, तो उसे निश्चित रूप से टिटनेस का संक्रमण नहीं होता और न ही उसकी मृत्यु होती। अतः, वादी का यह तर्क कि दुर्घटना में लगी चोटों और मृतक की मृत्यु के कारण के बीच कोई संबंध नहीं था, खारिज किया जाता है। न्यायाधिकरण ने सही निर्णय दिया है कि मृतक की मृत्यु दुर्घटना में लगी चोटों के कारण हुई और दुर्घटना केवल दोषी वाहन चालक की लापरवाही के कारण हुई थी।

17. वादी-बीमा कंपनी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा कोई अन्य मुद्दा नहीं उठाया गया।

18. दावेदारों-प्रतिवादियों का यह तर्क कि न्यायाधिकरण ने अपर्याप्त मुआवजा दिया है, इस अपील में जांचा नहीं जा सकता क्योंकि दावेदारों द्वारा कोई प्रति-अपील या प्रति-आपत्ति दायर नहीं की गई है।

19. इसलिए, इस अपील में कोई दम नहीं है और इसे खारिज किया जाना चाहिए।

20. अपील खारिज कर दी गई है। दिनांक 25-1-2011 को ट्रिब्यूनल द्वारा दिए गए विवादित निर्णय और पुरस्कार की पुष्टि की जाती है।

21. कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि वह वादी-बीमा कंपनी द्वारा संबंधित न्यायाधिकरण को जमा की गई वैधानिक राशि को तत्काल वापस कर दे।

22. यदि कोई अंतरिम आदेश था, तो वह रद्द माना जाएगा।

23. दावेदारों-प्रतिवादियों के विद्वान अधिवक्ता ने यह तर्क दिया कि अपील लंबित रहने के दौरान प्रतिवादी संख्या 2, 3 और 4 की मृत्यु हो चुकी है, अतः श्रीमती लक्ष्मी देवी- प्रतिवादी संख्या 1, शेष मुआवजे की राशि ब्याज सहित प्राप्त करने की हकदार हैं, जिसे वादी-बीमा कंपनी द्वारा इस न्यायालय के दिनांक 13-5-2011 के स्थगन आदेश के कारण जमा नहीं किया गया है।

24. चूंकि प्रतिवादी संख्या 2, 3 और 4 की मृत्यु हो चुकी है, इसलिए न्यायाधिकरण को निर्देश दिया जाता है कि वह शेष मुआवजे की राशि जीवित कानूनी उत्तराधिकारी, अर्थात् प्रतिवादी संख्या 1, श्रीमती लक्ष्मी देवी को कानून के अनुसार भुगतान करे।

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



25. कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि निचली अदालत का रिकॉर्ड तुरंत वापस भेज दिया जाए।

दिनांक: 22.01.2026

Translated version. Not for Legal Use.

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"